श्री कामेश्वर सिंह "सहायक प्रोफेसर"
राजनीति विज्ञान, रोहतास महिला कॉलेज सासाराम
वर्ग — बी०ए० पार्ट — III (प्रतिष्ठा)
पत्र संख्या — VI ; यूनिट नं० — 03

प्रमुख राजनीतिक चिंतक — डा० वी० के० झा
दिनांक — 01 — 06 — 2020

कौटिल्य के राजा संबंधी विचारों का शेष भाग...

राजा की दिनचर्या :— कौटिल्य की मान्यता है कि यदि राजा अपने कर्तव्यों के प्रति सजग रहता है, तो उसके अमात्यादि भृत्यवर्ग भी सचेष्ट रहते हैं। परन्तु राजा असावधान हो, तो उसके भृत्य भी प्रमादी होकर सारे कार्यों को चौपट कर देते हैं। अतः राजा को अपने कर्तव्यों के प्रति पूर्ण जागरूक रहना चाहिए। यह आवश्यक है कि राजा अपने विभिन्न कर्तव्यों का सम्पादन निश्चित समय पर करें। इसके लिए कौटिल्य ने राजा की दिनचर्या का निश्चित समय भी निर्धारित कर दिया है। उसके अनुसार राजा को अपने दिन और रात के समय को आठ-आठ भागों में विभाजित कर देना चाहिए। प्रत्येक भाग 1½ घंटे का होना चाहिए।

दिन के प्रथम अष्टम भाग में राजा को राज्य की रक्षा और आय-संबंधी बातों पर विचार करना चाहिए।

दूसरे भाग में पुरवासियों तथा जनपदवासियों के कार्यों का निरीक्षण करना चाहिए।

तीसरे भाग में स्नान-भोजन तथा स्वाध्याय करना चाहिए।

चौथे भाग में कर विभाग का निरीक्षण कर स्वर्णादि नकद रुपयों को ग्रहण करना चाहिए और शासनाधिकारियों की नियुक्तियों पर विचार करना चाहिए।

पाँचवें भाग में पत्र व्यवहार द्वारा मंत्रिपरिषद् से मंत्रणा करना चाहिए और गुप्तचरों से उनके कार्यों की समीक्षा सुननी चाहिए।

छठे भाग में स्वच्छंद रूप से विहार करना चाहिए या नीतियों के विषय में सोचना चाहिए।

सातवें भाग में हाथी, घोड़ा, रथ तथा

कार्यों का निरीक्षण करना चाहिए।

आठवें भाग में युद्धादि विषय के प्रश्नों पर सेनापति के साथ विचार-विमर्श करना चाहिए।

इसी प्रकार, रात के समय को भी आठ भागों में बाँटा गया है। रात के प्रथम भाग में राजा को गुप्तचरों से मिलना चाहिए।

दूसरे भाग में स्नान-भोजन तथा अध्ययन करना चाहिए।

तीसरे भाग में बाजा बजाना सुनते हुए लेटना चाहिए। चौथे और पाँचवें भाग में सोना चाहिए।

छठे भाग में मधुर वाद्य ध्वनि सुनकर उठना चाहिए तथा शास्त्र तथा आगामी दिन के कर्तव्यों के विषय में चिंतन करना चाहिए।

सातवें भाग में गुप्तचरों को अपने-अपने कार्यों पर भेजना चाहिए।

आठवें भाग में ऋत्विक, आचार्य तथा पुरोहित से आशीर्वाद ग्रहणकर वैद्य, पाकशाला के अधिकारी एवं ज्योतिषी से मिलना चाहिए और सवत्स गाय और बैल की परिक्रमा कर राज सभा में जाना चाहिए।

इस प्रकार, कौटिल्य ने राजा के लिए व्यस्त दिनचर्या निर्धारित की है। यह दिनचर्या बहुत कठोर है। परन्तु कौटिल्य का मत है कि देश, काल और परिस्थिति के अनुसार इस दिनचर्या में परिवर्तन किया जा सकता है।

इस प्रकार कौटिल्य ने अपने राजा के लिए एक ऐसी व्यस्त और कठोर दिनचर्या का निरूपण किया है उसे निरंकुश होने का समय नहीं मिल सकता है।

इस प्रकार कौटिल्य ने राजा को भोग, विलास, नाच, रंग आदि के लिए कोई भी समय उनमें नहीं दिया गया है और रात में भी इसके लिए केवल चार घंटे की ही व्यवस्था की गई है। अतः राजा के दिन रात के अर्थात् 24 घंटे को 16 घड़ियों में बाँटा है और रात्रि की पृथक् चर्या का वर्णन करता है। The End.

Scanned by CamScanner